घर हो स्वर्ग-सा सुंदर

एक अच्छा आर्किटेक्ट वह होता है, जो घर का निर्माण शुरू करने से पहले उसमें निवास करने वालों की पसंद, अरमान, जरूरतें तथा उम्मीदों को समझता है तथा इसके अनुरूप ही घर को डिजाइन करता है। निश्चित रूप से ऐसे घर में निवास करने पर व्यक्ति का जीवन सुखमय रहता है।

इस धरती पर भला कौन नहीं चाहता होगा कि उसका घर सपनों का घर हो, घर में रहते हुए व्यक्ति को पुरा सुकून व आराम मिल सके। उसकी हर इच्छा पूरी हो सके। घर ऐसा बने, जिसमें व्यक्ति की हर ख्वाहिशें जुड़ी हों, उसकी हर सोच को सकारात्मक दिशा मिल सके। एक ऐसा घर हो, जो व्यक्ति के अरमानों को पूरा कर सके। ऐसा घर तभी संभव है, जब घर बनाने वाला एक अच्छा आर्किटेक्ट मिले।

एक अच्छा आर्किटेक्ट वह होता है, जो घर का निर्माण शुरू करने से पहले उसमें निवास करने वालों की पसंद, अरमान, जरूरतें तथा उम्मीदों को समझता है तथा इसके अनुरूप ही घर को डिजाइन करता है। निश्चित रूप से ऐसे घर में निवास करने पर व्यक्ति का जीवन सुखमय रहता है।

मॉडर्न आर्किटेक्चर की इसी पद्धति को साइकोलॉजी इन आर्किटेक्चर कहा जाता है। अर्थात् आर्किटेक्चर में मनोविज्ञान का ध्यान रखना ही साइकोलॉजी इन आर्किटेक्चर है। गृहस्वामी को अपने घर में क्या पसंद है, क्या अपेक्षा रखता है, उसके दिमाग में घर की कैसी परिकल्पना, एक अच्छा आर्किटेक्ट इन बातों का गृह निर्माण में ध्यान रखकर ही उसको डिजाइन करता है।

साइकोलॉजी इन आर्किटेक्चर का जनक फिनलैंड के अल्वर ऑल्टो को माना जाता है, जिन्होंने गृह निर्माण से पूर्व तमाम छोटी-बड़ी बातों का ध्यान रखा। उस पर डिजाइन किया और कम जगह में सुंदर घरों का निर्माण किया। उन्होंने जो तरीके बताए, जिन सिद्धांतों का उल्लेख किया, वे आधुनिक समय में काफी चर्चित हो गए हैं तथा हर

आर्किटेक्ट अल्वर ऑल्टो के सिद्धांत से प्रेरणा लेकर घरों का निर्माण कर रहा है।

अल्वर ऑल्टो के सिद्धांतों के लोकप्रिय होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि आज बढ़ती आबादी और तंग होती जगह में सुंदर से सुंदर भवन निर्माण सिर्फ और सिर्फ अल्वर ऑल्टो के सिद्धांत व तरीकों से ही संभव है।

आज सिर्फ महानगरों में ही नहीं, बल्कि छोटे-मझोले शहरों में भी इसी सिद्धांत के आधार पर घरों का निर्माण किया जा रहा है।

साइकोलॉजी इन आर्किटेक्चर की खास बातें

प्लॉट चौकोर हो या फिर आयताकार प्लॉट ही सुंदर होता है। ऐसे प्लॉट पर मकान बनाने से गृह स्वामी को पूरा सुख मिलता है।

लेकिन अगर प्लॉट मन माफिक न हो, तो निर्माण के साथ समझौते करने पड़ते हैं।

अगर प्लॉट तिरछा या तिकोना है अथवा लंबाई में ज्यादा आकार वाला है, तो एक आर्किटेक्ट को काफी सावधानी बरतनी पड़ती है। फिर भी ऐसा मकान मन माफिक नहीं बन पाता। अत: भलाई इसी में है कि तिरछे या तिकोने प्लॉट से बचें।

तिरछे, तिकोने या लंबाई में बढ़े हुए प्लॉट के न्यूनतम कोण होने की वजह से ऐसे प्लॉट में सही आकार के कमरों का निर्माण कदापि संभव नहीं है।

अगर कोई और विकल्प न हो तथा इसी प्लॉट पर मकान बनाना पड़े, तो चौड़ाई व लंबाई का अनुपात 1:2 होना चाहिए। इससे बनने वाले मकान का हर कमरा खुला-खुला लगेगा। यहां रोशनी भी आएगी व हवा का भी प्रवेश होगा।

सीलिंग साइकोलॉजी

प्लॉट के आकार के हिसाब से सीलिंग की आनुपातिक ऊंचाई रखनी चाहिए।

ऐसा इसलिए भी जरूरी है कि इससे घर आयताकार अथवा वर्गाकार नजर आता है।

याद रखें - लंबाई व चौड़ाई को नजरंदाज करके सीलिंग की ऊंचाई ज्यादा रखने की भूल कदापि न करें, अन्यथा उस घर में निवास करने पर घर की तरह ही आपका व्यक्तित्व भी भद्दा दिखेगा और जीवन का विकास थम-सा जाता है।

एक सूत्र में सरल सिद्धांत है- प्लॉट के अनुसार लंबाई:चौड़ाई:ऊंचाई आनुपातिक हो।

पुराने जमाने में भवन का निर्माण होता था, तो कमरे की सीलिंग को काफी ऊंचा रखा जाता था, तब उस जमाने में बिजली नहीं थी। घर में पंखे या एयरकंडीशनर नहीं होता था और लोग प्राकृतिक रोशनी व हवा पर आश्रित होते थे, जो घर की सीलिंग की ऊंचाई बढ़ाने से ये प्राकृतिक तत्व रहने वालों को आसानी से उपलब्ध हो जाते थे।

आज जमाना काफी बढ़ गया है। गांव-गांव में बिजली पहुंच गई है और घरों में कमरों में पंखे या एयर कंडीशनर आ गये हैं अथवा एयर कूलर की व्यवस्था है, जो गर्मी को मात देने में सक्षम हैं। अत: वर्तमान समय में सीलिंग की ऊंचाई ज्यादा रखने की आवश्यकता ही क्या है। इससे और कुछ नहीं, तो घर का स्वरूप ही बिगड़ जाएगा। अत: सीलिंग को कमरे की लंबाई, चौड़ाई के अनुपात में ही रखना चाहिए।

पुराने जमाने में बरामदे की सीलिंग को भी ऊंचा रखा जाता था, ताकि गृहस्वामी तथा उसके परिवार के सदस्यों को गर्मी से राहत मिल सके, साथ ही प्राकृतिक हवा व रोशनी प्राप्त हो सके। चूंकि आज गर्मी की चिंता नहीं है, अत: घर को सुंदर व डिजाईन में रखने की चाहत से बरामदे की सीलिंग को नीचा रखा जा रहा है। यही चलन में भी है।

सीलिंग साइकोलॉजी के अनुसार बरामदे का लो सीलिंग रिलैक्स और कोजी अहसास दिलाता है।

लो सीलिंग वाले बरामदे में परिवार के साथ बैठा गृहस्वामी आत्मीयता महसूस करता है। उसे ऐसा महसूस होता है कि वह परिवार के साथ और गहराई से तथा और नजदीक से जुड़ गया है।

नेचुरल एंड ओपन प्लॉट साइकोलॉजी

एक अच्छा व सुंदर मकान तभी दिखता है, जब इसमें प्राकृतिक तत्वों का आवागमन सुनिश्चित हो। एक आर्किटेक्ट की यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है कि वह ऐसा घर बनाए, जहां प्राकृतिक हवा व रोशनी का आवागमन बना रहे। यह इसलिए भी आवश्यक है कि एक आम इंसान को जिंदा रहने के लिए हवा, पानी, सूर्य प्रकाश बहुत जरूरी है। जिस घर में यह सब उपलब्ध नहीं होता, वहां घुटन की स्थिति रहती है। प्राय: लोग बीमार रहते हैं। वे बेचैनी व हताशा भरी जिंदगी व्यतीत करते हैं।

ऐसे घरों में रहने वाले लोग अशांत, आक्रामक व हिंसात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। यहां परिवार में प्रेम व मैत्री भाव नहीं होता। बल्कि बात-बात पर मरने-मारने की बातें होती हैं। नकारात्मक ऊर्जा की बहुलता से हर काम नकारात्मक दिशा में ही संपन्न होता है।

ऐसा घर जहां प्राकृतिक वायु व रोशनी नहीं मिले, उस घर में रहने वाले सदस्यों खासकर स्त्री वर्ग को काफी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। वे प्रायः बीमार, कुंठित व हताशा के भंवर में घुट-घुटकर जीती हैं। कई स्त्रियों द्वारा आत्महत्या के कदम उठा लेने की घटनाएं भी प्रकाश में आयी हैं। इसलिए ऐसा घर बने, जहां प्राकृतिक तत्वों का समावेश हो।

चूंकि शहर की भीड़भाड़ व कोलाहल के बीच बनाए गए तंग मकान में प्राकृतिक तत्वों की आपूर्ति नहीं हो सकती, इसलिए आर्किटेक्ट शहर से दूर खुली जगह में मकान बना रहे हैं और लोगों को स्वस्थ व सुकून भरा वातावरण उपलब्ध करा रहे हैं। ऐसे मकान लोगों को रास भी आ रहे हैं। अगर यह कहा जाए, तो कोई गलत नहीं होगा कि आजकल शहर के घुटन भरे माहौल से दूर खुले माहौल में प्लॉट पर मकान बनाने का प्रचलन बढ़ा है। खुले माहौल में बनाए गए मकान सुंदर भी दिखते हैं और खास बात यह भी रहती है कि वहां वास्तु का पूरा ध्यान भी रखा जाता है।

ओपन प्लॉट में बनाए जाने वाले मकान में आवश्यकतानुसार खिड़कियों और रोशनदानों की संख्या रखें।

अगर खिड़कियां रखने की जगह कम है अथवा माकूल नहीं है, तो रोशनदानों की संख्या बढ़ा दें। इससे प्राकृतिक तत्वों खासकर नम तत्व की आपूर्ति होती रहेगी।

अगर घर में रोशनदान लगा रहे हैं, तो उसकी ऊंचाई सात फीट रखें। इतनी ऊंचाई पर रोशनदान रहने से रोशनी का आवागमन बना रहेगा। हवा भी मिलती रहेगी घर के प्राणियों को।

ताकि घर सुंदर दिखे, इसलिए यह जरूरी है कि दरवाजे, खिड़कियां तथा रोशनदानों को आनुपातिक हिसाब से रखा जाए।

स्काईलाइट सिस्टम साइकोलॉजी

आजकल बड़े घरों में स्काईलाइट सिस्टम साइकोलॉजी का धड़ल्ले से प्रयोग हो रहा है।

इसके द्वारा हवा और रोशनी की उपलब्धता सुनिश्चित की जाती है। स्काईलाईट सिस्टम का प्रयोग खास कर वहां करना चाहिए, जहां प्राकृतिक तत्वों की आपूर्ति ठीक तरह से नहीं हो पाती है।

आइए जानते हैं कि स्काई लाईट सिस्टम क्या है।

मूलरूप से छत पर कुछ हिस्से को खुला छोड़ने के बाद उसे फाईबर ग्लास से इस प्रकार ढका जाता है कि हवा का पर्याप्त आवागमन बना रहे। इसमें रोशनी के कारण घर में अंधेरा नहीं रहता। चूंकि यह सिस्टम वैज्ञानिक तकनीक पर आधारित है। अतः स्वच्छ वातावरण उपलब्ध कराने के साथ-साथ यह घर को आकर्षक व सुंदर भी बनाता है।

स्काई लाईट सिस्टम का साईकोलॉजी यह है ऐसे घर में, जहां यह वैज्ञानिक तकनीक काम कर रही है, सदस्यों का आत्मविश्वास ऊंचा रहता है तथा स्वाभिमान बढ़ता है। उन्हें ऐसा महसूस होता है कि उनके गिर्द सब भरा है तथा उन्हें और कुछ की जरूरत नहीं है। एक खुशी, एक उत्साह का बोध होता रहता है। यह उनके कैरियर तथा सफलता में योगदान देता है।

डेकर साइकोलॉजी

घर में डेकर साइकोलॉजी के अंतर्गत वे चीजें अथवा तत्व शामिल किए जाते हैं, जो घर में निवास करने वाले लोगों की पसंद तथा उनकी परिकल्पना को साकार करें तथा एक स्वच्छ, सुमधुर वातावरण का निर्माण करके उनके आत्मविश्वास तथा आंतरिक खुशियों में इजाफा करें।

डेकर के अंतर्गत प्लांट्स(इनडोर तथा आउटडोर प्लांट्स), गार्डेनिंग, प्लांटेशन, वृक्षारोपण, पुष्प सज्जा, कला आदि को शामिल किया जाता है। जहां तक प्लांट्स की बात है, यह मनुष्य को प्रकृति के काफी करीब ले जाते हैं और व्यक्ति को ऐसा महसूस होता है कि धरती मां की छत्र छाया उसे अनवरत मिल रही है। यह सुख उसे सब सुखों से बड़ा लगता है, साथ ही उसका मानसिक व शारीरिक विकास भी होता है।

इनडोर तथा आउटडोर प्लांट्स मनुष्य को प्रकृति के साथ जोड़ते हैं तथा प्राकृतिक तत्वों की आपूर्ति करते हैं।

घर का निर्माण करते समय डिजाइनिंग में बगीचे को भी शामिल करना चाहिए। यह जरूरी नहीं है कि बगीचा बड़ा ही हो। छोटे बगीचे से ही काम चल जाएगा। बगीचा प्रकृति का एक स्वरूप है। यहां बैठने से, घूमने से सभी प्राकृतिक तत्वों की आपूर्ति हो जाती है।

व्यक्ति को कुछ देर के लिए यहां समय बिताना चाहिए। इससे उसके अंदर प्रेम, स्नेह व उल्लास की भावना प्रबल होती है, जो उसके सकारात्मक जीवन के लिए आवश्यक है।

मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि वह प्रकृति के ज्यादा से ज्यादा करीब रहना चाहता है। यहीं वह सुख व सुकून पाता है। मनुष्य चाहे जितना ही ज्यादा गुस्से व तनाव में हो, प्रकृति उसके गुस्से व तनाव को हर लेती है तथा व्यक्ति को आत्मिक सुख व सुकून पहुंचाती है। बगीचा आपके इस सुख को पूरा करता है।

अगर प्लांट्स में जगह की कमी है तथा किसी भी तरह से चाहे छोटा ही सही, बगीचा रखना मुमकिन नहीं है, तो भी चिन्ता की बात नहीं है। इंडोर प्लांट्स हैं न आपके पास।

इंडोर प्लांट्स को लिविंग रूम, किचन, डाइनिंग रूम,

स्टडी रूम और बाल्कनी में जगह देकर प्रकृति के साथ जुड़ सकते हैं।

हरियाली व्यक्ति को मंत्र-मुग्ध कर देती है। उसकी आंखों की चमक बढ़ाती है। इसलिए घर में हरे-भरे व तरोताजा प्लांट्स ही लगाएं, जो आपको हमेशा खुश व संतुष्ट रखे।

अगर पर्याप्त जगह है, तो आउटडोर फाउंटेन पर विचार करें।

वैसे आजकल इंडोर फाउंटेन का चलन बढ़ा है।

इंडोर फाउंटेन का प्रयोग लिविंग रूम में किया जाता है। इसके पीछे साइकोलॉजी है कि इससे व्यक्ति कूल-कूल का अहसास करता है।

घर के अंदर छोटे पौधों को ही प्रमुखता देनी चाहिए।

किचन में पौधा लगाने से किचन की खूबसूरती तो बढ़ ही जाती है, साथ ही किचन का वातावरण स्वच्छ व स्नेहिल बन जाता है। इसका लाभ गृहिणी को मिलता है। गृहिणी का मन खाना पकाने में लगता है। खाना स्वादिष्ट बनता है। इसका लाभ पूरे परिवार को मिलता है।

लिविंग रूम में हरियाली तथा बांस का पौधा व्यक्ति को हमेशा तरोताजा रखता है।

इस तरह प्लांट्स साइकोलॉजी से घर का आंतरिक परिवेश निखर उठता है। तथा व्यक्ति को घर में प्रेम, स्नेह के साथ-साथ ऊर्जा व इमेज का भी अहसास होता है।

कलर साइकोलॉजी

डेकर साईकोलॉजी के अंतर्गत् कलर साईकोलॉजी भी आता है। घर का, कमरों का रंग-रोगन व्यक्ति की पसंद तथा उसकी इच्छा के अनुसार ही होना चाहिए। रंग ऐसा हो, जो व्यक्ति के आंतरिक मन को आह्लादित कर सके। उसे सुकून दे सके तथा उसके दिमाग को तरोताजा रख सके।

कमरे में ऐसा रंग-रोगन कराएं, जिससे कमरा तरोताजा दिखे।

कमरे का रंग ऐसा होना चाहिए, जो आपको प्रभावित कर सके।

बैठक के लिए रंग करते समय इस बात का ध्यान रखें कि बाहर से आया व्यक्ति आकर्षित हो सके। साथ ही दीवारें निखरी-सी लगें। रंग ऐसा हो कि अनायास ही आगंतुक के मुंह से निकले 'वाह.....वाह!'

इस लिहाज से यहां हल्के प्राकृतिक रंग, जैसे हरा, आसमानी आदि काफी ठीक रहता है।

किचन में क्राकरी का प्रयोग करने से किचन का लुक निखर उठता है।

घर के लिए, घर के अलग-अलग कमरों के लिए पर्दों का चयन उसके हिसाब से ही होना चाहिए। पर्दों का चयन करते समय इस बात का भी पूरा ख्याल रखें कि वह घर के कमरों के रंगों से मैच हो सके।

सोफा पर कवर चढ़ा देने से उसका लुक खिल उठता है।

मेज पर मेजपोश रखें। पोश का रंग दीवारों के रंग से मिलता-जुलता रहे।

टी.वी. सेट के ऊपर गुलदस्ता रखने से उसका लुक निखर उठता है।

डाइनिंग रूम वह कमरा है, जहां घर के सदस्य एक साथ बैठकर भोजन करते हैं। उनमें वार्तालाप भी होता है। अत: इस कमरे को ऊर्जामय, सुकून से भरा व स्निग्ध बनाए रखने के लिए दीवारों को ऑरेंज या हल्के नारंगी कलर से निखारें।

शयन कक्ष में व्यक्ति की उम्र, अवस्था तथा उसकी पसंद के अनुसार ही रंगों का चयन करना चाहिए।

बड़े-बुजुर्गों के कमरे में शांत रंगों का प्रयोग करें।

युवाओं के कमरे में उनकी पसंद के हिसाब से भड़कीले या पीले रंगों का प्रयोग किया जाना ठीक रहता है। लेकिन लाल रंग का प्रयोग कतई नहीं किया जाना चाहिए।

शादी-शुदा, नव विवाहित दंपत्तियों के कक्ष में हल्के सुर्ख रंगों का प्रयोग कर सकते हैं।

फ्लोरिंग साइकोलॉजी

बगैर फ्लोरिंग के घर को सुंदर, जीवंत रूप नहीं दिया जा सकता है। इसलिए यह जरूरी है कि उचित व संतुलित फ्लोरिंग का चयन करके घर को स्मार्ट लुक दे सकें।

फ्लोरिंग करते समय निम्न बातों का ध्यान रखें :-

अत्यधिक डिजाईन वाली फ्लोरिंग से घर की सुंदरता नष्ट होती है। अत: जितना साधारण हो सके, फ्लोरिंग रखें।

कूल फ्लोरिंग को वरीयता दें। इसके अंतर्गत मार्बल, चिप्स, विट्रीफाइड टाइल्स का ही प्रयोग करें।

टाइल्स का रंग कमरे के आकार व डिजाईन के अनुसार संतुलित ही होना चाहिए।

टाइल्स का प्रयोग करते समय ऐसा अहसास हो कि घर खुला व सुकून देने वाला बन सके अथवा इसका आप अहसास कर सकें।

शयन कक्ष में फ्लोरिंग करते समय इसमें निवास करने

वाले व्यक्ति की इच्छा व सुकून का ध्यान रखें।

लिविंग रूम अथवा ड्राइंग रूम की फ्लोरिंग में थोड़ी नक्काशी की जा सकती है। क्योंकि इस रूम को खूबसूरत लुक देना भी आपका ध्येय है।

अंत में यही कहना चाहूंगा कि घर को इतना खूबसूरत न बना दें कि किसी की इसको नजर लग जाए और इतना भी साधारण न रहने दें कि लोग आपके पास जाने से कतराने लगें। एक संतुलन व मध्यम के हिसाब से प्रकृति से जुड़कर रहें, तो घर स्वर्ग-सा सुंदर दिखता है।

फर्नीचर (थीम) साइकोलॉजी

घर को संवारने के लिए डेकॉर साइकोलॉजी के अंतर्गत् थीम फर्नीचर भी आता है। यह घर को खास लुक देता है।

थीम फर्नीचर औरों से अलग आपके घर की पहचान कराता है और आपके आत्मविश्वास में इजाफा लाता है। थीम फर्नीचर से घर को सज्जा कर आप गौरव का अनुभव करेंगे।

वर्तमान समय में थीम फर्नीचर का चलन बढ़ा है, क्योंकि इसमें लागत भी कम आती है और घर का लुक भी खिल उठता है।

राजेन्द्र का एक ही सपना था कि वह अपने घर को खास लुक दे सके। लेकिन उसकी जेब में इतने पैसे नहीं थे कि वह मनचाहे तरीके से घर का डेकॉर कर सके। घर बनाने में काफी पैसे खर्च हो गए थे। लोन भी लेना पड़ा था। वह इसी उधेड़-बुन में थे कि किस तरह अपने घर को औरों से अलग दिखा सकें, तभी उनके एक आर्किटेक्ट मित्र ने उनके मन की बात जानकर उन्हें थीम आधारित फर्नीचर अपनाने का सुझाव दिया। राजेन्द्र ने साज-सज्जा के लिए इसी विकल्प को चुना और घर की सजावट देखकर दंग रह गए..... कम बजट में इतना बड़ा कमाल!

थीम फर्नीचर घर के किसी खास हिस्से, जैसे केवल लिविंग रूम के लिए ही खरीद सकते हैं।

जैसे-जैसे वक्त बीत रहा है, वैसे-वैसे घरों की साज-सज्जा में भी बदलाव आने लगे हैं। फर्नीचरों में भी परंपरागत फर्नीचर से लेकर मॉडर्न और कंटेम्परेरी फर्नीचर तक थीम फर्नीचर की पहुंच हो चुकी है। इनमें विक्टोरियन, रॉट आयरन आदि को शामिल किया जा सकता है। इन फर्नीचरों ने बाजार में अपनी अलग पहचान बनायी है। घरों में इनकी उपयोगिता घर को नया स्वरूप प्रदान करने में सक्षम है।

अगर आप अपने घर को परंपरागत रूप से संवारना चाहते हैं, तो लकड़ी के बने फर्नीचरों का इस्तेमाल कर सकते हैं।

लकड़ी पर की गई महीन नक्काशी घर की सज्जा में राजसी एहसास छोड़ने का काम करती है।

अगर आप इस तरह का सोफा इस्तेमाल करते हैं, साथ ही चाहते हैं कि लिविंग रूम में सिटिंग अरैंजमेंट को और बढ़ाया जाए, तो लकड़ी की कुर्सियों का ही इस्तेमाल करें।

कुर्सियों के पायों पर अगर कुछ डिजाईन किया गया हो, तो सोफे के साथ ये पूरी तरह मैच कर जाएंगी।

आप लिविंग रूम में मोढ़ों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

बेंत से बने फर्नीचर कमरे को ट्रेडीशनल लुक देते हैं।

अगर आप नक्काशीदार परंपरागत फर्नीचरों का चुनाव कर रहे हैं, तो इसमें भी कई विकल्पों को अपनाया जा सकता है।

राजस्थानी शैली में की गई नक्काशी काफी सुंदर दिखती है।

गुजराती शैली की नक्काशी भी अलग लुक देने में सक्षम है।

कमरे में कॉर्नर टेबल के लिए चेस बोर्ड की शैली का टेबल ले सकते हैं।

ध्यान रखें कि अगर फर्नीचर का आधार आपने पारंपरिक थीम को बनाया है, तो सेंटर टेबल भी उसी के अनुरूप लें। ऐसे में वहां ग्लास टॉप की टेबल लगाकर सज्जा का तालमेल न बिगाड़ें।

अगर आप कंटेम्परेरी थीम के मुताबिक घर सजाना चाहते हैं, तो ऐसे में फर्नीचरों की अलग-अलग रेंज एकत्रित करें।

मेटल, आयरन, रॉट, फाइबर आदि से बने फर्नीचर बेहतरीन विकल्प हैं।

ऐसे फर्नीचरों के रंगों में भी भारी विविधता देखने को मिलती है। इस तरह आप कमरे को मिक्स्ड एंड मैच का रूप दे सकते हैं। जैसे आपका थ्री सीटर सोफा लेमन है, तो बाकी दो सिंगल्स सीटर सोफा ब्राउन कलर के ले सकते हैं।

इस तरह फर्नीचर आधारित डेकॉर घर व कमरे को अलग लुक देता है, साथ ही आपकी जेब की भी बचत होती है। यही कारण है कि इन दिनों यही ट्रेंड में है। ❑❑❑